IJAER/ July-August 2018/Volume-7/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

छायावादी सौन्दर्य चेतना

डॉ योगेश कुमार यादव
सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय अटेली
महेन्द्रगढ़ हरियाणा

सार

छायावादी काव्य सौंदर्य का अपूर्व भंडार है। सौंदर्य का महत्व क्या है ? क्या कोई भी मनुष्य सौंदर्य से अप्रभावित रह सकता है ? सौन्दर्य हमारी चेतना को जागृत कर उसे उदात्त बनाता है। सौंदर्य के आकर्षण से मनुष्य अपने रूढ़ बंधनों से मुक्त होकर आजाद होता है, मुक्त होने की इसी शृंखला में मनुष्य राजनीतिक और सामाजिक मुक्ति को भी प्राप्त करता है। विश्व बाजार के घटाटोप अंधकारमय चौतरफा खतरों की इस आपाधापी में हमारी स्वाधीनता पर खतरे मंडरा रहे हैं तो नए अवसरों की पहचान भी हो रही है।

जयशंकर प्रसाद को भारत का मुकुट हिमालय आकर्षित करता है। प्रसाद की परिकल्पना नई न होकर भी अपने समसामयिक संदर्भों से जुड़ी हुई है। पंत और निराला भी इसी प्रकार सौंदर्य को तद्युगीन समस्याओं से जोड़कर नया अर्थ भरते हैं। आज देश आजादी के 75 वर्ष पूर्ण कर चुका है। छायावोदोत्तर साहित्य सम्पदा से हम गौरवान्वित महसूस नहीं कर रहे हैं बल्कि गौरवान्वित होने का कारण छायावादी काव्य ही नजर आता है। छायावादी काव्य में आज भी हम अपनी अस्मिता की तलाश करते हैं। मनुष्य जाति जब तक अपनी सांस्कृतिक विरासत को ठीक से नहीं समझेगी तब तक वह अधूरी ही रहेगी। छायावादी का प्रारंभ कहां से माना जाये, इसके विस्तार में जाने की जरूरत नहीं है आलोचकों ने पल्लवके प्रवेश को छायावाद का घोषणा पत्र माना है। जहां तक छायावाद शब्द के प्रथम प्रयोग की बात है, डॉ. नामवर सिंह ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'छायावाद' में लिखा है–''छायावाद का आरंभ सामान्यतः 1920 के आसपास से माना जाता है।''[1]

छायावादी सौंदर्य चेतना से आशय है कि छायावादी कवियों की बुद्धि या विवेक में सौन्दर्य गढ़ने का क्या नया विजन था ?उनकी सौन्दर्यानुभूति का स्वरूप क्या था ?इस स्वरूप की जड़े परंपरा में कहां तक फैली हुई थी ? वे वस्तु में सौन्दर्य देखते थे या कर्म में, छायावादियों की सौन्दर्य विषयक सोच में राष्ट्रीय जागरण की संवेदना कहां तक काम कर रही थी ?

छायावाद के जन्म होने तक देश में राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता की चेतना जन्म ले चुकी थी और विदेशी ताकतों से मुक्त होने की उर्जा हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत से ही मिल रही थी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की स्वच्छंदतावादी कविता ने छायावादियों की सौंदर्य चेतना को गहरे तक प्रभावित किया था। छायावादी कवि राजनैतिक चेतना से जुड़ा हुआ है और देश काल के प्रति संवेदनशील है

जयशंकर प्रसाद की काव्य चेतना की उर्जा का मुख्य आधार क्या है ? इनको हिमालय सर्वाधिक प्रिय है। प्रसाद औदात्य के कवि हैं। प्रसाद अपने व्यक्तित्व के अनुरूप ही विराट बिम्बों का सर्जन करते हैं। इसलिए वे हिमालय, सागर, आकाश, कैलाश, बादल बिजली आदि में अपनी सौंदर्य चेतना को ढालने का प्रयास करते हैं। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने इस संबंध में लिखा है–''वर्ड्सवर्थ दैनिक बोलचाल की भाषा को ही काव्य के लिए उपयुक्त मानते थे परंतु प्रसाद ने परिष्कृत और अभिजात भाषा का प्रयोग किया। प्रसाद प्राचीन काव्य शैली

के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। वे प्रेरणा संस्कृत कवियों से लेते रहे नकि अंग्रेजी कवियों से उनकी समस्त सर्जना भारतीय परिवेश के भीतर रही है। पश्चिम की अनुकृति का भाव उनमें कहीं नहीं है।''[2]

छायावाद का सर्वोच्च साहित्य पश्चिम की ओर पीठ करके लिखा गया है। कामायनी में प्रसाद ने सौंदर्य को चेतना का उज्ज्वल वरदान कहा है–

''उज्ज्वल वरदान चेतना का
सौंदर्य जिसे सब कहते हैं,
जिसमें अनंत अभिलाषा के
सपने सब जागते रहते हैं।''[3]

यहां ध्यान देने की बात है कि प्रसाद उसी को सुंदर मानते हैं, जो हमारी चेतना में नई आशा अभिलाषा के सपने जगाता है।

मिर्जा गालिब का महत्वपूर्ण शेर है–

ईमाँ मुझे रोके है तो खेंचे हैं मुझे कुफ्र
काबा मिरे पीछे है, कलीसा मिरे आगे

गालिब की तरह छायावादियों के आगे भी 'कलिसा' था और उन्हें एक तरफ इस'कलिसा' से लड़ना था तो दूसरी ओर 'काबा' से जो पुरानी बिमारी की तरफ पीछा छोड़ने वाली नहीं थी। आशय स्पष्ट है कि छायावादियों को काव्य सौंदर्य में वह धार पैदा करनी भी जो एक और विदेशी सत्ता से विद्रोह करे तो दूसरी और प्राचीन रूढियों से।

प्रसाद ने काव्य में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के कारण रूप में सौंदर्य को माना है। वे सकारात्मक अनुभूति को आत्मा की मनन–शक्ति के विशिष्ट अवस्था मानते हैं–''आत्मा की मनन–शक्ति की वह अवधारणा अवस्था, जो श्रेय सत्य को उसके मूल चारूत्व में सहसा ग्रहण कर लेती है, काव्य में संकल्पनात्मक मूल अनुभूति कही जा सकती है।''[4]

छायावाद में महादेवी वर्मा के काव्य का फलक अन्य छायावादियों की अपेक्षा छोटा है, उसी प्रकार उनके निबंधों की भावभूमि भी विस्तृत नहीं है। फिर सौंदर्य पर उनकी दृष्टि साफ है। उनके अनुसार ''सत्य काव्य का साध्य और सौन्दर्य साधन है। एक अपनी एकता में असीम रहता है और दूसरा अपनी अनेकता में अनंत।''[5]

छायावादी कवियों ने छायावादोत्तर कवियों की अपेक्षा सौन्दर्य की साधना पर बल दिया है। सौंदर्यवादी कवि सुमित्रानंदन पंत ने सौंदर्यबोध को छायावाद की सबसे मौलिक और प्रमुख देन''[6] घोषित किया है।

छायावाद व्यक्ति निष्ठ न होकर मूल्य केंद्रित काव्य है। छायावाद में भावसौंदर्य पर अधिक बल है न की रूप सौंदर्य पर। छायावाद के सौंदर्यबोध की नूतनता के विषय में पंत जी ने लिखा है–''छायावाद ने अपना सौंदर्यबोध विगत–गुणों के संचय–स्वरूप जीर्ण खलिहानों एवं भंडारों से उधार न लेकर, उसे स्वयं नये रूप से प्रकृति केउर्वर आंगन में उगाया और उसकी प्राणमयी बोलियों से अपनी नवमुग्धा काव्य चेतना का शृंगार किया।''[7]

सुमित्रानंदन पंत के लिए जीवन और जगत् में जो सौंदर्यपूर्ण है वही चिर महान और सत्य रूप है–''जग जीवन के जो चिर महान/सौंदर्यपूर्ण और सत्य प्राण/में उसका प्रेमी बनू–––?पंत ने मानव को प्रकृ ति से सुंदर कहा है– सुंदर है विहग सुमन सुंदर मानव तुम सब में सुंदरतम। युगांतर पृष्ठ 46

छायावादी कवि निराला सौंदर्य चेतना के विषय में विविध स्तरों पर सशक्त, रूढिभंजक और क्रांतिकारी दिखाई देते हैं। निराला अपनी पुत्री सरोज की शारीरिक सौंदर्य को वर्णन करने का साहस करते हैं–

आयी लावण्य–भार थर–थर

काँपा कोमलता पर सस्वर

ज्यों मालकौश नव वीणा पर

क्या दृष्टि! अतल की सिक्त–धार

ज्यों भोगवती उठी अपार

––––––––––––––––––––

उमड़ता ऊर्ध्व को कल सलील

जल टलमल करता नील–नील

छलकता दृगों से साध–साध।''[8]

तोड़ती पत्थर में मजदूर महिला का संतुलित शारीरिक सौंदर्य उसके कर्म–सौंदर्य से चमक उठता है–

श्याम तन, भर बँधा यौवन,

न्त नयन, प्रिय कर्म–रत–मन,

गुरू हथौड़ा हाथ,

करती बार–बार प्रहार–

सामने तरू–मालिका अट्टालिका प्राकार।''[9]

उपर्युक्त पंक्तियों के बारे में निराला ने जानकी वल्लभ शास्त्री को पत्र में लिखा है ''यहां सीधा वर्णन होने पर भी, हथौड़े की चोट पत्थर पर भी देखिए, किस प्रकार अट्टालिका पर पड़ती है।''[10]

'राम की शक्ति पूजा' में भी राम का सौंदर्यउनके कर्म में ही निहित है– आराधना का दृढ़ आराधना से उत्तर देने में निहित है।

'राम की शक्ति पूजा' में निराला ने 'पृथ्वी तनयाकुमारिका' सीता और राम के लतान्तराल मिलन में जिस सौंदर्य की सृष्टि की है, वह तुलसीदास के पुष्पवाटिका–प्रसंग से बहुत मिलता है।तुलसी की सीता जगत–जननी है और पूज्य है। निराला की सीता तद्युगीन भारतीय नारी का प्रतिनिधि है। उसे निराला ने दूसरे स्तर पर भारत माता का रूप दिया है। सीता की मुक्ति भारत माता की मुक्ति है। भारतीय भक्ति की संवेदना में सीता और पार्वती एक दूसरे के पर्याय हैं।

छायावादी कवियों ने नारी–सौंदर्य के प्रति विशेष रुचि दिखाई है। उनकी सौन्दर्य चेतना में नारी का रूप गरिमामय है। पंत जी लिखते हैं तप्त–भोग–लालसा से मर्दित पुष्पों की शय्या पर लेटी विलुसित केश,

स्वेद–सिक्त, नखक्षत अंकित, रीतिकाव्य की मध्ययुगीन हासोन्मुखी राग–प्रवृत्ति की देह मूर्ति निशाभि–सारिका नारी को छायावाद ने गुह्य संकेत स्थलों से प्रकृति के मुक्त लीला प्रांगण में बाहर निकालकर,दूतियों की चाटुकारी तथा परकीयत्व के कलंक से मुक्त कर, तथा मध्यवर्गीय कुंजों की सड़ांध भरे केली–कदम से ऊपर उठाकर, उसके अर्द्ध–नग्न रूप को अपनी पवित्र भावनाओं केअकलुषसौन्दर्य से मंडित गरिमा प्रदान की।''[11] इसी क्रम में वे आगे लिखते हैं–''सभी छायावादी कवियों ने अपने –अपने ढंग से राग–मूल्य उन्नीत सौंदर्य को अपनी काव्य वस्तु में अभिव्यक्त दी है। उन्होंने नारी को उसका प्रतीक बनाकर उसे मध्ययुगीन देह–बोध तथा राग–द्वेष की संकीर्ण कामान्ध, उन्नत, भाव–स्वप्नों से उसकी नवीन मूर्ति निर्मित कर,व्यक्ति मोह के धरातल से उठाकर, विस्तृत सामाजिक धरातल पर लोक–जीवन–मंगल कर्म में संलग्न मानवी के रूप में प्रतिष्ठित किया है।''[12]

छायावाद पर महत्वपूर्ण कार्य करने वाले वरिष्ठ आलोचक नंददुलारे वाजपेयी ने मध्यकालीन और छायावादी सौंदर्य चेतना के अंतर को स्पष्ट करते हुए ठीक ही लिखा है–''जहां पूर्ववर्ती भक्तिकाव्य में जीवन के लौकिक और व्यवहारिक पहलुओं को गौण स्थान देकर उनकी उपेक्षा की गई थी, वहीं छायावादी काव्य प्राकृतिक सौंदर्य और सामाजिक जीवन की परिस्थितियों से मुख्यतः अनुप्राणित है––––––––––।छायावाद मानव जीवन सौंदर्य और प्रकृति को आत्मा का अभिन्न अंग मानता है।''[13]

इसी विषय पर हिंदी के एक अन्य महत्वपूर्ण आलोचक एवं कवि डॉक्टर केदारनाथ सिंह ने लिखा है–''छायावाद विशुद्ध प्रकृति काव्य नहीं है। वह केवल सूक्ष्म मानवीय अनुभूतियों की बाह्यप्रतिकृति है। इसलिए उसमें आयाहुआ प्रत्येक प्राकृतिक बिम्ब अपने रूपगत सौंदर्य के अतिरिक्त किसी गहरी अनुभूति अथवा परोक्ष चेतना का सूक्ष्म संकेत भी है।''[14]

हम कह सकते हैं की छायावादी सौंदर्य चेतना कोई वायवीय धारण न होकर नवीन जीवन बोध से प्रेरित थी। इस धारणा का सन्दर्भ भारतीय संस्कृति समाज और राजनीति था। छायावादी चेतना नवजागरण से ओतप्रोत थी जिसके स्वर में राष्ट्रीय मुक्ति का स्थान सर्वोत्तम है। इस मुक्ति की कामना ने व्यक्तिगत, सामाजिक और नैतिक हर स्तर पर रूढ़ियों से विद्रोह किया।सौन्दर्य छायावादी काव्य का 'विजन' था। इस काव्य धारा में जीवन मूल्यों के प्रति गहरी आस्था प्रकट होती है। मानव जीवन की ऐसी सुंदर अभिव्यक्ति इससे पूर्व भारतीय काव्य में नजर नहीं आती।

1. नामवर सिंह – छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990 पृ.–11
2. नन्ददुलारे वाजपेयी –कवि सुमित्रानन्दन पंत, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1997, पृ.– 17
3. प्रसाद ग्रन्थावली खण्ड–1, लज्जा, पृ. 512
4. जयशंकर प्रसाद–काव्य कला तथा अन्य निबंध पृ.–26
5. महादेवी वर्मा–दीप–शिखा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण–1995, पृ. 7
6. सुमित्रानन्दन पंत – छायावादः पुनर्मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1965 पृ. 106
7. सुमित्रानन्दन पंत–पंत ग्रंथावली–6, छायावादः पुर्नमूल्यांकन, पृ. 111
8. निराला – अनामिका, सरोज स्मृति पृ. 97
9. निराला – अनामिका, तोडती पत्थर, पृ. 62
10. निराला – निराला रचनावली – 8 (सं.) नन्दकिशोर नवल, पेपर बैंक संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1998 पृ. 244
11. सुमित्रानन्दन पंत – पंत ग्रंथावली – 6, छायावादः पुनर्मूल्यांकन पृ. 69–70
12. सुमित्रानन्दन पंत – पंत ग्रंथावली – 6, छायावादः पुनर्मूल्यांकन पृ. 108–109
13. नंद दुलारे वाजपेयी – आधुनिक साहित्य, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, वि. 2018, पृ. 320

14. केदारनाथ सिंह – निराला की कविताएँ : मूल्यांकन और मूल्यांकन (सं.) परमानन्द श्रीवास्तव, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद – 1992